लूट-लूट कर भर लिया

ISSN: 2583-8849
साहित्य रत्न ई-पत्रिका अगस्त2023 वर्ष1 अंक4

डॉ. अरविन्द कुमार पाल
पिता, श्री रामेश्वर दयाल पाल
जन्मतिथि- 13 जुलाई 1973
शिक्षा- स्नातक, बी.ए. एम. एस.
साहित्यिक रुचि- दोहे, गीत, मुक्तक, आदि पर
अनवरत लेखन ।
सम्प्रति- सरस्वती चिकित्सा केंद्र
निवास- नगला खरा
भोंगांव मैनपुरी (उत्तर प्रदेश)

नजर-नजर का फेर है, नजर - नजर का खेल।
पास किसी को कर दिया, किया किसी को फेल।।-१

कुटिल भौंह तिरछे नयन, अधर रसीले लाल।
गाल गोल रक्तिम लसे, मोहक रूप कमाल।।-2

भोले बाबा कीजिए, हम सब पर उपकार।
कहो इंद्र से रोक दें, बारिश वाली धार।।-3

इतनी बारिश हो गई , फसल हुई बर्बाद।
प्रभुजी सुनो किसान की, इतनी सी फरियाद।।-4

अब तो बारिश रोकिए, बुरा हुआ है हाल।
प्रभु से विनती कर रहा, हर किसान का लाल।।-5

लूट-लूट कर भर लिया, जिसने माल तमाम।
किसे पता कर पाएगा, कोई अच्छा काम।।-6

अन्त समय आया निकट, मन में उठे विचार।
नाहक लोगों पर किए , मैंने अत्याचार।।-7

लूट-पाट करता रहा, भूला हरि का नाम।
दौलत जो थी पास में, काम न आई राम।।-8

भोर हुआ सूरज उगा, पक्षी करते शोर।
बागों में कलरव हुआ, झूमे नाचे मोर।।-9

बादल मड़राने लगे, हवा चली पुरजोर।
अजब नजारा हो गया, देखो चारों ओर।।-10

यौवन पर थी शीत ऋतु, ठंडी चली बयार।
पशु पक्षी व्याकुल हुए, सह सर्दी की मार।।-11

निकले तो थे खेत को, होकर वे तैयार।
देख हवा की तीव्रता, लौटे हिम्मत हार।।-12